



2nd - ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 2

पेपर 2 || सामाजिक विज्ञान

भारत का इतिहास एवं राजस्थान का भूगोल



विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	सिंधु घाटी सभ्यता – नगर नियोजन, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन	1
2	वैदिक युग – सामाजिक और धार्मिक जीवन	8
3	बौद्ध धर्म और जैन धर्म – उत्थान के कारण और शिक्षाएँ	14
4	मौर्य स्रोत, राजनीतिक और प्रशासनिक विशेषताएँ	23
5	मौर्योत्तर काल	31
6	गुप्त शासकों की राजनीतिक उपलब्धियाँ; कला, साहित्य और विज्ञान का विकास	38
7	भक्ति और सूफी आंदोलन	44
8	मुगल काल	55
9	शिवाजी राजनीतिक और प्रशासनिक उपलब्धियाँ	70
10	1857 की क्रांति; कारण, प्रकृति और मुख्य घटनाएँ	73
11	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस – प्रारंभिक चरण (उदारवादी और गरम दल)	78
12	गांधीजी के जन आंदोलन असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन	84
13	20वीं सदी के भारत में क्रांतिकारी आंदोलन	91
14	आधुनिक विश्व में राजनीतिक क्रांतियाँ	114
15	राजस्थान का सामान्य परिचय	128
16	राजस्थान की भौगोलिक स्थिति	133
17	राजस्थान की जलवायु	145
18	प्राकृतिक वनस्पति और मृदा	153
19	राजस्थान की प्रमुख नदियाँ और झीलें	163
20	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ	176
21	कृषि प्रमुख फसलें, उत्पादन और वितरण	184
22	राजस्थान के खनिज संसाधन	190

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
23	राजस्थान की जनजातियाँ	201
24	प्रमुख उद्योग	207
25	राजस्थान की जनसंख्या	214

सिंधु घाटी सभ्यता - नगर नियोजन, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन

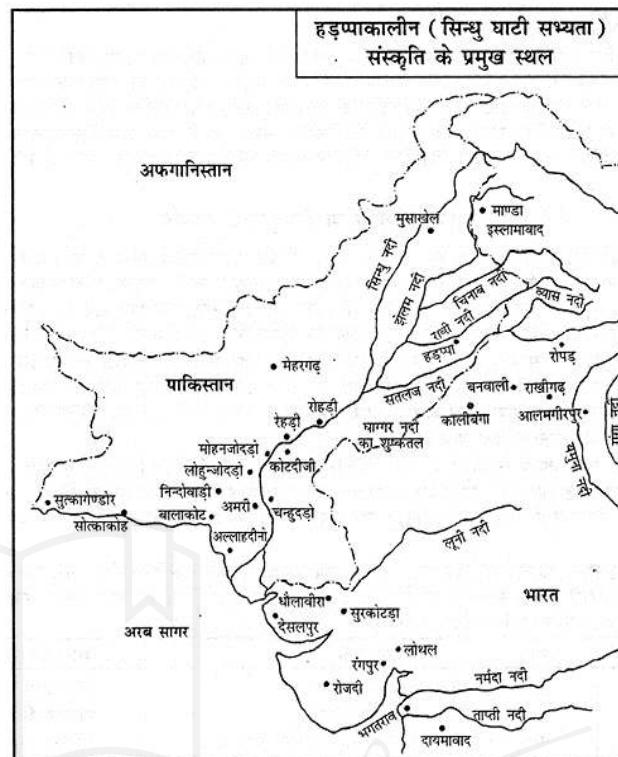
सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।
 - मेसोपोटामिया और मिस्र की सभ्यताओं के समकालीन।
 - भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित।
 - **1853** - ए कनिधम द्वारा एक हड्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
 - **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्त्विक स्थल)। इसलिए इसे हड्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
 - **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदहो की खोज।
 - मूलतः एक **नदी सभ्यता**।
 - **कांस्य युगीन सभ्यता**।
 - इस सभ्यता को हड्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि सर्वप्रथम 1921 में पाकिस्तान के शाहीवाल जिले के हड्पा नामक स्थल से इस सभ्यता की जानकारी प्राप्त हई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन क्लीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन काइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- क्षेत्रफल- लगभग 13 लाख वर्ग किमी
 - विस्तार- सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
 - उत्तरतम स्थल- जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
 - सुदूर दक्षिणी स्थल- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
 - पश्चिमी स्थल- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
 - सुदूर पूर्वी स्थल- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडुन)



हड्डा सभ्यता के चरण

१. प्रारंभिक/पूर्व-हड्ड्या चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
 - एक आद्य-शहरी चरण।
 - गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
 - विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
 - फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
 - स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
 - सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड्डप्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड्डिया, मोहनजोद़हो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
 - सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
 - स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आ

हड्ड्या सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड्ड्या (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। “अन्न भंडार का शहर”।	रावी	<ul style="list-style-type: none"> 6 अन्न भण्डारी की दो पंक्तियाँ। यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले ताबूत शवाधान लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा तांबे की बैलगाड़ी लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक देवी माँ की टेराकोटा आकृति। एक कमरे की बैरक कांस्य के बर्तन। गढ़(उठे हुए भू भाग पर) पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित।	सिंधु	<ul style="list-style-type: none"> विशाल सानागार (आनुष्ठानिक सान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) बुने हुए कपड़े का टुकड़ा नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। सूती कपड़ा देवी माँ की मुहर योगी की मूर्ति पशुपति मुहर दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति मेसोपोटामिया की मुहरें नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात राज्यों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	<ul style="list-style-type: none"> 6 वर्गों में बंटा हुआ तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) चावल की भूसी के साक्ष्य दोहरा शावाधन अग्नि वेदियां जहाज का टेराकोटा मॉडल माप के लिए हाथीदांत का पैमाना फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	<ul style="list-style-type: none"> गढ़ के बिना एकमात्र शहर मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। ईट पर कुत्ते के पंजे की छाप बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	<ul style="list-style-type: none"> अग्नि वेदियां पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं, मिट्टी की ईंटों का प्रयोग कुओं वाले घर जल निकासी व्यवस्था नहीं पूर्व-हड्ड्या और हड्ड्या चरण दोनों के प्रमाण दिखते हैं
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	<ul style="list-style-type: none"> जल संचयन प्रणाली तूफानी जल निकासी व्यवस्था स्टेडियम 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख) 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।

રંગપુર (1931) (ગુજરાત)	મહર	<ul style="list-style-type: none"> પૂર્વ + પરિપક્ષ હડ્પણ ચરણ કે અવશેષ પથર કે ટુકડે કે સાક્ષ્ય
બનાવલી (1973-74) (હિસાર, હરિયાણા)	સરસ્વતી	<ul style="list-style-type: none"> પૂર્વ + પરિપક્ષ + ઉત્તર હડ્પણ ચરણ હલ કા ટેરાકોટા માંડલ કોઈ જલ નિકાસી પ્રણાલી નહીં જૌ કે દાને લાપીસ લાજુલી (રાજવર્ત) ત્રિજય સડકો વાળા એકમાત્ર સ્થળ
રાખીગઢી (1963) (હરિયાણા)		<ul style="list-style-type: none"> ભારત મેં સબસે બડા આઈવીસી સ્થળ એક છિન્ન હુર્રી મહિલા આકૃતિ
સુરકોટડા (1964) (કચ્છ, ગુજરાત)		<ul style="list-style-type: none"> ઘોડે કે અવશેષ ઔર કબ્રિસ્તાન ભાંડ શવાધાન અંડાકાર કબ્ર
અમરી (1929) (સિંધ, પાકિસ્તાન)	સિંધુ	<ul style="list-style-type: none"> ગૈંડે કે સાક્ષ્ય
રોપડ (પંજાਬ, ભારત)	સતલજ	<ul style="list-style-type: none"> આજાદી કે બાદ ખોડા જાને વાળા પહોલા સ્થળ કુત્તે કો ઇંસાન કે સાથ દફનાયે જાને કે સાક્ષ્ય અંડાકાર ગર્ત શવાધાન તામ્બે કી કુલ્હાડી
આલમગીરપુર (ઉત્તર પ્રદેશ)	યમુના	<ul style="list-style-type: none"> ટૂટી હુર્રી તાંબે કી બ્લોડ
દૈમાબાદ (મહારાષ્ટ્ર)	પ્રવરા	<ul style="list-style-type: none"> કાંસ્ય ચિત્ર (ગૈંડે, બૈલ, હાથી ઔર રથ કે સાથ સારથી)

સનૌલી-

2005 મેં સનૌલી ઉત્ખનન 1.0

- 116 કબ્રોની કી ખોજ કી ગઈ।
- તાપ્રાપાષાણ કાલ મેં ભારત કે સબસે બડે જ્ઞાત કબ્રિસ્તાન મેં સે એક કે રૂપ મેં સંદર્ભિત।
- શવાધાન સિંધુ ઘાટી સભ્યતા સે અલગ હૈનું।
- શરીર કે પાસ વ્યવસ્થિત ફૂલદાન, કટોરે ઔર બર્તન।
- સૈનિકોની શવોની કે સાથ દબે બર્તનોની મેં ચાવલ કે સાક્ષ્ય મિલે।
- 8 એંથ્રોપોમોરાફિક આંકડે (કુછ ઐસા જો ઇંસાનોની જૈસા દિખતા હૈ)।
- માનવરૂપી આકૃતિયાં મિલે।

2018 મેં સનૌલી ઉત્ખનન 2.0

- 2018 મેં ફિર સે પ્રકાશ મેં આયા જબ એક કિસાન ને ખેત કી જુતાઈ કરતે સમય જમીન મેં પુરાવશેષ પાએ જાને કી સૂચના દી।
- ઘોડે દ્વારા ખીંચે જાને વાલે રથ (લગ્ભાગ 5000 વર્ષ પુરાને) પાએ ગએ।
- તાંબે કી તલવાર, યુદ્ધ ઢાલ આદિ જૈસે કઈ હથિયાર પાએ ગએ।
- ઇસ બાર મૃદ્ભાણ્ડોની કે સાથ લક્ધી કે ચાર પૈરોની વાલે તાબૂત
- જાનવરોની કો કાબૂ કરને કે લિએ ચાબુક મિલા હૈ, જિસકા અર્થ હૈ કી યહું રહને વાળી જનજાતિ જાનવરોની કો નિયત્રિત કરતી થી।
- મહિલા + પુરુષ યૌદ્ધા ભી તલવારોની કે સાથ દબે પાએ ગએ હૈનું।
- હાલાંકિ દફનાને સે પહેલે ઉનકે ટખનોની કે નીચે કે પૈરોની કો કાટ દિયા ગયા થા।

મૃદ્ભાણ્ડ:

- ગૈરિક મૃદ્ભાંડ (OCP) સંસ્કૃતિ।
- ઉત્તર પરિપક્ષ હડ્પણ સંસ્કૃતિ કે સમાન લેકિન કઈ અન્ય પહુલુઓની મેં ઇસસે અલગ હૈ।

સિંધુ ઘાટી સભ્યતા કી વિશેષતાએँ

1. નગર નિયોજન-

- કિલાબધિત
- સુનિયોજિત સડકેની
- કસ્બોની મેં ઉત્ત્ર જલ નિકાસી વ્યવસ્થા।
- શહર- દો યા દો સે અધિક ભાગ।
 - પથ્થીમી ભાગ - છોટા લેકિન ઊંચા - ગઢ- શાસક વર્ગ કે કબ્જે મેં।
 - પૂર્વી ભાગ- બડા લેકિન નિચલા- આમ યા કામકાજી લોગોની કા નિવાસ -ઇંટોની સે બને ઘર।

- હડ્પણ ઔર મેં મોહનજોડાડો દોનોની મેં એક ગઢ થા। (ઇન દો સ્થળોની કી આઈવીસી કી રાજધાની કહા જાતા હૈ)
- કસ્બોની મેં એક આયતાકાર ગ્રિડ પૈર્ટન યા જિસમે સડકેની એક-દૂસરે કો સમકોણ પર કાટતી થીની।
- 1 યા 2 મંજિલા મકાન થે।
- મંદિર યા મહલ જૈસી કોઈ બડી સ્મારકીય/ એતિહાસિક- સંરચના નહીં પાયી ગયી હૈ।
- નિમણની લિએ પકી ઔર કચ્ચી ઈંટોની ઔર પથરોની કા ઉપયોગ।
- મકાન કચ્ચી કી ઈંટોની સે બને હોતે થે, જબકી જલ નિકાસી પ્રણાલી પકી ઈંટોની સે બનાઈ જાતી થી।

2. विशाल स्नानागार-

- गढ़ के टीले में
- ईंटों से बना एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
- टैंक तक जाने के लिए सीड़ियाँ थीं।
- माप- 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
- टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से बना था।
- बगल के कमरे में एक बड़े कुएं से पानी निकाला जाता था, जिसे नाले में खाली कर दिया जाता था।
- कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।

3. धान्यागार-

- मोहनजोदहो की सबसे बड़ी इमारत, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
- हड्ड्या- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
- वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो अनाज ताढ़ने के लिए थीं, (वहाँ मिले गेहूँ और जौ के साक्ष्य से पता चलता है।)
- कालीबंगा- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।

4. जल निकासी व्यवस्था-

- हर घर में अपना आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार होता था।
- इन घरों का पानी गली की नालियों में जाता था जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
- हड्ड्या के लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान देते थे।

5. कृषि-

- सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण सिंधु क्षेत्र उपजाऊ था।
- जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध जलोढ़ मिट्टी का जमाव हुआ (सिंधु क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
- जली हुई इंटों से बनी दिवारों की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ़ ग्रस्त था।
- बीज नवंबर में बोए जाते थे और अप्रैल में फसल काटी जाती थी।
- कटाई के लिए पत्थर के दरांती का उपयोग।
- नहरों द्वारा सिंचाई का अभाव। हालाँकि, शोरतुगाई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
- पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान और बलूचिस्तान के कुछ हिस्सों में नालियों से धिरे गबरबंद या नालों का निर्माण किया गया।

- कालीबंगा के पूर्व-हड्ड्या चरण में जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- फसलें- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य।)
- धोलावीरा में जलाशयों का उपयोग कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
- दुनिया में कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
- हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली में खोजा गया।
- वस्तु विनिमय के लिए अनाज का उपयोग। किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
- इस अवधि के दौरान दोहरी फसल की प्रथा शुरू हुई।

6. पशुपालन-

- लोगों ने पशुचारण का अभ्यास किया।
- वे भेड़, मरेशी, बकरी, सूअर और भैंस जैसे जानवरों को पालते थे।
- बिल्लियों और कुत्तों को भी पालतू बनाया गया था।
- हाथियों को भी पाला गया - गुजरात।
- कूबड़ वाला बैल - हड्ड्यावासियों का पसंदीदा
- ऊंट और गधे - भार ढोने वाले पशु।
- खरगोश, जंगली पक्षी, कबूतर भी मौजूद थे।
- गैंडे के साक्ष्य- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटा में पाए गए।

7. व्यापार एवं वाणिज्य-

- वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित।
- पत्थर, धातु, खोल आदि का उपयोग करके व्यापार किया जाता था।
- मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड्ड्या मुहरों से स्पष्ट होते हैं।
- लोथल के बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात के लिए किया जाता था।
- निष्पुर से मिली मुहर में हड्ड्या लिपि और एक गेंडे का चित्रण है।
- क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया और हड्ड्यावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख करता है। इसमें "मेलुहा" नाम का उल्लेख है जो सिंधु क्षेत्र को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को संदर्भित करता है।
- हड्ड्या की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त हुई हैं।
- हड्ड्यावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं - सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।

- हड्ड्या के बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-
 - मोहनजोदङ्गो से बेलनाकार मुहरों की खोज,
 - हड्ड्यावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौदर्य प्रसाधनों का उपयोग,
 - हड्ड्या में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान, और
 - मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।

बाहरी व्यापार मार्ग-

- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने फारस, मेसोपोटामिया और चीन जैसी कई अलग-अलग सभ्यताओं के साथ व्यापार किया।
 - अरब की खाड़ी क्षेत्र, एशिया के मध्य भागों, अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों और उत्तरी और पश्चिमी भारत में व्यापार करने के लिए भी जाना जाता है।
- जिन वस्तुओं का व्यापार किया गया थे -
- टेराकोटा के बर्तन, मनके, सोना, चांदी, रंगीन रत्न जैसे फिरोज़ा और लैपिस लाजुली, धातु, चक्रमक पथर, सीपियाँ और मोती।

आंतरिक व्यापार मार्ग -

- बलूचिस्तान, सिंध, राजस्थान, चोलिस्तान, पंजाब, गुजरात और ऊपरी दोआब
- प्रमुख व्यापार मार्ग -
 - सिंध और दक्षिण बलूचिस्तान
 - सिंध के मैदान और राजस्थान
 - सिंध और पूर्वी पंजाब
 - पूर्वी पंजाब और राजस्थान
 - सिंध और गुजरात
- प्रारंभिक हड्ड्या काल में प्रमुख मार्ग- सिंध-बलूचिस्तान
- परिपक्व हड्ड्या काल में प्रमुख मार्ग
 - संभवतः नदी व्यापार।
 - तीर्थ मार्ग गुजरात को मकरान तट से जोड़ते हैं।

8. भार और मापन-

- वज़न मापन के लिए एक द्विआधारी प्रणाली का पालन किया।
- दशमलव प्रणालियों से अवगत।
 - अनुपात की इकाई 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
 - 16 छाँक = 1 सेर और 16 आने = 1 रुपये के बराबर थे।

9. कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -

- चूना पथर - सुक्कुर और रोहड़ी के चूना पथर की पहाड़ियों खनन।
- ताम्बा - खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड्ड्या सभ्यता के बीच संबंध।
- टिन - तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया
- सोना - ऊपरी सिंध या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
 - पिकलीहल के मनके
 - अर्द्ध कीमती पथर - गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

9. शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का निर्माण किया जाता था
- ईट की चिनाई की कला जानते थे
- धातुओं की रंगाई और उनके प्रगलन की कला जानते थे
- सीसा, कांस्य, टिन का बड़े पैमाने पर उपयोग

1. प्रस्तर प्रतिमा -

- परिष्कृत पथर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ।
- हड्ड्या और मोहनजोदङ्गो में पाई गई पथर की मूर्तियाँ - त्रि-आयामी खंडों के लिए उत्कृष्ट उदाहरण।
- उदा. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पथर से बना नर धड़।

2. कांस्य कास्टिंग

- 'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है और सूखने दिया जाता है - मोम को गर्म किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है। इस प्रकार बनाया गया खोखला साँचा पिघले हुए धातु से भर दिया जाता है। जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- धातु के ठंडा होने के बाद, मिट्टी का आवरण पूरी तरह से हटा दिया जाता है।
- धातु ढलाई एक सतत परंपरा प्रतीत होती है।
- प्रमुख केंद्र- दैमाबाद, महाराष्ट्र

3. टेराकोटा

- पथर और कासे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता है।
- गुजरात और कालीबंगा में अधिक यथार्थवादी।
- सबसे महत्वपूर्ण - देवी माँ।

4. मुहर

- लगभग 200 मुहरों की खोज की गई
- ज्यादातर स्टीटाइट से बनी। कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट, चर्ट, हाथी दांत से बनी।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ चौकोर आकार की थीं
- मुख्य रूप से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग ताबीज के रूप में भी किया जाता था।
- मुहरें चित्रात्मक थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गेंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- मुहरों की लिपि का अर्थ अब तक नहीं निकाला गया है

- सबसे महत्वपूर्ण मुहर- मोहनजोद़ो से पशुपति महादेव मुहर
- लोथल- फारस की खाड़ी की मुहरें मिली हैं।

5. मनके

- सोने, चांदी, तांबे, कांस्य और अर्द्ध कीमती पत्थरों से बने।
- मुख्य रूप से बेलनाकार
- लोथल और धोलावीरा- मनके बनाने की दुकान

10. धातु, उपकरण और हथियार-

- तांबे-कांस्य के औजार बनाना जानते थे।
- उन्होंने तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी जैसे हथियार बनाने के लिए चकमक पत्थर की (रोहड़ी चेर्ट से बने), तांबे और हड्डियों, हाथीदांत के औजारों का उपयोग किया।
- लोहे का ज्ञान नहीं

11. लिपि-

- पहली बार 1853 में खोजी गयी।
- पूरी लिपि पहली बार 1923 में खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
- सबसे बड़े हड्डिया शिलालेख में 26 संकेत हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
- लिपि - चित्रात्मक
- लेखन की कला से अवगत - बाँह से दाँह लेखन

12. मृदभाण्ड-

- चाक और अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग
- कृष्ण लोहित मृदपात्र।
- भंडारण जार, कटोरे, व्यंजन, छिद्रित जार, आदि के रूप में उपयोग किया जाता है।
- पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षेत्रिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
- आधार समतल था।
- लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चिनित किया गया था।
- हड्डिया - पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-
 - नाल संस्कृति (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
 - झोब संस्कृति (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
 - केटा (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।

13. धर्म-

- धर्मनिरपेक्ष समाज
- देवी माँ की पूजा की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज की गई जिसमें पृथ्वी / देवी माता को उनके गर्भ से उगने वाले पौथे के साथ दर्शाया गया है।
- पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं और गैंडा और भैंस से घिरे हुए, बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
- प्रकृति को पूजते थे - पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
- पूजे जाने वाले जानवर - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
- पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे।
 - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
- मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं।
- जादू, आकर्षण और बलिदान में विश्वास।
 - बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें।
 - कालीबंगा, बनावली और लोथल की अग्निवेदी।

14. राजनीतिक संगठन-

- इतिहासकारों के अनुसार, व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित।
- एक द्वासरे से स्वतंत्र शहर।
- उनके बीच कोई संघर्ष नहीं।
- लोगों की बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम जैसा संगठन।

सभ्यता का पतन

- 1900 ईसा पूर्व के बाद पतन शुरू।
- अन्य स्थलों पर हड्डिया संस्कृति धीरे-धीरे फीकी पड़ गई।
- उत्तर हड्डिया चरण /उप-सिंधु संस्कृति- कृषि, पशुपालन, शिकार और मछली पकड़ने पर निर्भर थी।
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ व्यापार संपर्कों के अंत के साक्षी बने।
- लगभग 1200 ईसा पूर्व, पंजाब और हरियाणा के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े धूसर मृदभांड और चित्रित धूसर मृदभांड पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में झूकर संस्कृति का विकास हुआ। इसे ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था।

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	
इतिहासकार	पतन के कारण
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वर्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मॉर्टिमर हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

“यह भी उद्धृत किया गया है कि आग और मलेरिया जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के कारण थे।”



वैदिक युग - सामाजिक और धार्मिक जीवन

आर्यों की मूल पहचान

- वैदिक युग की शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई।
- आर्य मूल रूप से स्ट्रेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।
- बाद में वे मध्य एशिया चले गए और फिर लगभग 1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश किया था।
- वे सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र (सात नदियों की भूमि) में आकर बसे। ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्राह्मण, झेलम, परुष्णी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- भाषा- इंडो-यूरोपीय।
- औजार - सॉकिटेड कुलहाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्त्विक साक्ष्य खोजे गए)।
- वैदिक काल 1500 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच का था।
- आर्यों की मूल उत्पत्ति - विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य बहस का विषय।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास	
आर्यों का मूल निवास	विद्वान
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स म्यूलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्डो
बैक्ट्रिया	जे.सी.रॉड
सप्त सिंधु	डॉ अविनाश चंद्र दास और डॉ संपूर्णनंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एल.डी.कला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान/ स्ट्रेपी	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

वैदिक साहित्य

- वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
- वेद शब्द का अर्थ है ज्ञान।
- वैदिक साहित्य कई शताब्दियों में विकसित हुआ और इसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया।
- उन्हें बाद में संकलित और लिखा गया था,
- सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11वीं शताब्दी की है।
- 4 वेद और प्रत्येक के 4 भाग हैं - संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।
- वेद

ऋग्वेद	<ul style="list-style-type: none"> यह वेदों में सबसे प्राचीन है। • 1028 स्तोत्रों का संग्रह। • दस मंडलों या पुस्तकों में विभाजित। • भाषा- वैदिक संस्कृत। • उत्पत्ति- 1500-1000 ई.पू. • स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में देवी-देवताओं को समर्पित। • इंद्र- प्रमुख देवता (स्वर्ग का राजा)। • अन्य देवता- आकाश देव, वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • मंडल 2 - 7 - ऋग्वेद का सबसे पुराना हिस्सा, उन्हें "पारिवारिक पुस्तकें" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • मंडल 8 - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • मंडल 9 - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • मंडल 1 - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • मंडल 10 - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता है। • एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति- शाकल शाखा। • उपवेद- आयुर्वेद
--------	---

सामवेद	<ul style="list-style-type: none"> साम का अर्थ है "माधुर्य" मंत्रों की पुस्तक। 16,000 राग। प्रार्थना की किताब या "मंत्रों के ज्ञान का भंडार" 1875 श्लोकों का उल्लेख- केवल 75 मूल, शेष ऋग्वेद से। उपवेद- गंधर्व वेद
--------	--

<p>यजुर्वेद</p> <ul style="list-style-type: none"> • यजुर नाम का अर्थ "बलिदान" है। • विभिन्न बलिदानों से जुड़े अनुष्ठानों और मंत्रों से संबंधित। • दो प्रमुख विभाग- <ul style="list-style-type: none"> ◦ शुक्ल यजुर्वेद/वजस्त्रेय/श्वेत यजुर्वेद- इसमें केवल मंत्र होते हैं। इसमें माध्यन्दिन और कण्व पाठ शामिल हैं। ◦ कृष्ण यजुर्वेद - इसमें मंत्र और गद्य भाष्य शामिल हैं। इसमें कथक, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और कपिस्थलम पाठ शामिल हैं। • वाजसनेयी संहिता- शुक्ल यजुर्वेद में संहिता। • उपवेद - धनुर्वेद 	<p>आरण्यक</p> <ul style="list-style-type: none"> • अध्ययन गाँवों से दूर अरण्यों/वनों में होता था, इसीलिए इन्हें आरण्यक कहते हैं। • गृहस्थाश्रम में यज्ञविधि का निर्देश करने के लिए ब्राह्मण-ग्रन्थ उपयोगी थे और उसके बाद वानप्रस्थ आश्रम में सन्यासी आर्य यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्वों का विवेचन करने वाले आरण्यकों का अध्ययन करते थे। • उपनिषदों का विकास इन्हीं आरण्यकों से हुआ। आरण्यकों का मुख्य विषय आध्यात्मिक तथा दार्शनिक चिंतन है।
<p>अर्थर्ववेद</p> <ul style="list-style-type: none"> • ब्रह्मा वेद के नाम से भी जाना जाता है। • मुख्य रूप से 99 रोगों के उपचार पर केंद्रित। • दो ऋषियों- अर्थर्व और अंगिरा से जुड़े। • उपचार उद्देश्यों के लिए काले और सफेद जादू का अभ्यास शामिल है। • वैदिक संस्कृत में रचित। • 6,000 मंत्रों के साथ 730 स्तोत्र हैं जो 20 पुस्तकों में विभाजित हैं। • दो पाठ - पिप्पलाद और सौनाकिय संरक्षित हैं। • मुंडक उपनिषद और मांडुक्य उपनिषद अंतर्निहित हैं। • यह लोगों की लोकप्रिय मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्णन करता है। • उपवेद - शिल्प वेद 	<p>उपनिषद</p> <ul style="list-style-type: none"> • चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद गिनाये गए हैं, किन्तु 11 उपनिषद ही अधिक प्रसिद्ध हैं- ईशा, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर। • इनमें छान्दोग्य और बृहदारण्यक अधिक प्राचीन हैं। <p>वेदान्त</p> <ul style="list-style-type: none"> • वेदों का "निष्कर्ष" (अंत), भारत का सबसे पुराना पवित्र साहित्य है। • उपनिषदों (वेदों का विस्तार) पर लागू होता है। • वेदान्त मीमांसा ("वेदान्त पर चिन्तन"), उत्तरा मीमांसा ("वेदों के अंतिम भाग पर चिन्तन"), और ब्रह्म मीमांसा ("ब्राह्मण पर चिन्तन")। • 3 मौलिक वेदान्त ग्रंथ - <ul style="list-style-type: none"> ◦ उपनिषद (बृहदारण्यक, चंदोग्य, तैत्तिरीय और कथा जैसे लंबे और पुराने उपनिषद सबसे पसंदीदा हैं)। ◦ ब्रह्म-सूत्र (वेदान्त-सूत्र), उपनिषदों के सिद्धांत की बहुत संक्षिप्त, एक-शब्द की व्याख्या। ◦ भगवद्गीता ("भगवान का गीत") अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, उपनिषदों में दिए गए सिद्धांतों के समर्थन के लिए तैयार की गई थी। • बलिदान, समारोहों की निंदा करता है और वैदिक काल के अंतिम चरण को दर्शाता है।

ब्राह्मण-ग्रन्थ

- चारों वेदों के संस्कृत भाषा में प्राचीन समय में जो अनुवाद थे 'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्' के अनुसार वे ब्राह्मण ग्रन्थ कहे जाते हैं।
- चार मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ हैं- ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ।
- **वेद संहिताओं के बाद ब्राह्मण-ग्रन्थों का निर्माण** हुआ है।
- प्रत्येक वेद में एक य एक से अधिक ब्राह्मण हैं।
- प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण हैं।
- **ऋग्वेद** के दो ब्राह्मण हैं - (1) ऐतरेय ब्राह्मण और (2) कौशीतकी।
- ऐतरेय में **40** अध्याय और आठ पंचिकाएँ हैं, इसमें गवामय, अग्निष्टोमन, द्वादशाह, सोमयागों, अग्निहोत्र तथा राज्याभिषेक ऐतरेय ब्राह्मण जैसा ही है।
- **कौशीतकी** से पता चलता है कि उत्तर भारत में भाषा के सम्पर्क अध्ययन पर बहुत बल दिया जाता था।

वेदांग

- सूत्रि ग्रंथों का हिस्सा क्योंकि वे परंपरा द्वारा सौंपे जाते हैं।
- वेदांग का शास्त्रिक अर्थ "वेदों के अंग" है।
- **600** इसा पूर्व के दौरान संग्रहित हुआ।
- **पूरक ग्रंथ**- वैदिक परंपराओं की समझ से संबंधित है।
- मानवीय मूल के माने जाते हैं और सूत्रों के रूप में लिखे गए हैं (विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संक्षिप्त कथन हैं)।
- **6 वेदांग** इस प्रकार हैं-
 1. **शिक्षा** -
 - स्वर शास्त्र का अध्ययन।
 - यह संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों और वैदिक पाठ में शब्दों को जोड़ने और व्यक्त करने के तरीके पर केन्द्रित हैं।

- 2. छंद -**
- पद्य का अध्ययन, काव्य सामग्री से संबंधित।
 - प्रत्येक पद्य में अक्षरों की संख्या, उनके भीतर निश्चित आकार/रूप का विश्लेषण शामिल है।
- 3. व्याकरण -**
- विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों और वाक्यों के निर्माण को उपयुक्त को स्थापित करने के लिए व्याकरण और भाषा विज्ञान का विश्लेषण।
- 4. निरुक्त -**
- व्युत्पत्ति विज्ञान का अध्ययन, विशेष रूप से पुरातन शब्दों के अर्थ को समझाने के संबंध में।
- 5. कल्प -**
- अनुष्ठान निर्देशों पर केन्द्रित (बहुत पुराने और अप्रचलित)।
 - जीवन की घटनाओं से जुड़े संस्कार, विवाह, जन्म और अन्य अनुष्ठानों के लिए वर्णित प्रक्रियाओं से संबंधित। यह व्यक्तिगत कर्तव्य और उचित आचरण की अवधारणाओं का भी अन्वेषण करता है।
- 6. ज्योतिष -**
- शुभ समय का अध्ययन, जो अनुष्ठानों का मार्गदर्शन और समय-निर्धारण करने के लिए ज्योतिष और खगोल विज्ञान का उपयोग करने की वैदिक प्रथा पर आधारित है।

वेदांग	अंगों से तुलना
शिक्षा	पैर
छंद	हाथ
व्याकरण	आंखें
निरुक्त	कान
कल्प	नाक
ज्योतिष	चेहरा

प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- सप्त सिंधु नामक सात नदियों की भूमि/देश में आकर रहने लगे।
- उनके क्षेत्र में अफगानिस्तान, पंजाब और हरियाणा के वर्तमान भाग शामिल हैं।
- सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित है और सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय (पवित्र नदी) है।
- हिमालय या गंगा का कोई उल्लेख नहीं।
- समुद्र को पानी के संग्रह के रूप में जाना जाता है, सागर के रूप में नहीं।

राजनीतिक संरचना

- राजन के नाम से जाने जाने वाले राजा के साथ राजशाही रूप। राजशाही रूप, राजा को राजा के नाम से पुकारा जाता था।

- पितृसत्तात्मक परिवार।
- ऋग्वैदिक काल में जन सबसे बड़ी सामाजिक इकाई थी।
- सामाजिक समूहीकरण :- कुल (परिवार) → ग्राम → विसु → जन।
- जनजातीय सभाओं को सभा और समितियाँ कहा जाता था।
- आदिवासी राज्यों के उदाहरण - भरत, मत्स्य, यदु और पुरु।

सामाजिक संरचना

- महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था।
- उन्हें सभाओं और समितियों में भाग लेने की अनुमति थी।
- महिला विद्वान थीं (अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववर और घोष)।
- एकपतित्व का प्रचलन था लेकिन राजघरानों और कुलीन परिवारों में बहुविवाह होता था।
- बाल विवाह अप्रचलित।
- सामाजिक भेद-भाव मौजूद थे लेकिन कठोर और वंशानुगत नहीं थे।

आर्थिक संरचना

- वे चरवाहे और पशुपालन करने वाले लोग थे।
- वे कृषि का अभ्यास करते थे।
- परिवहन के लिए नदियों का उपयोग करते थे।
- सूती और ऊनी कपड़ों को काटकर इस्तेमाल करते थे।
- प्रारंभ में, व्यापार वस्तु विनियम प्रणाली के माध्यम से किया जाता था, लेकिन बाद में 'निष्का' नामक सिक्कों का उपयोग किया जाने लगा।

शिक्षा

- मंत्रों का पाठ किया - छात्रों द्वारा दोहराया गया।
- उद्देश्य - व्यक्ति की बुद्धि को तेज करना और उसके चरित्र का विकास करना।
- मुख्य रूप से चरित्र में धार्मिक और पिता द्वारा अपने पुत्रों को प्रदान की गई।
- इस बारे में कोई निश्चितता नहीं है कि लेखन की कला लोगों को ज्ञात थी या नहीं।

संस्कृति और धर्म

- प्रकृतिवाद बहुदेववाद - वे प्राकृतिक शक्तियों जैसे पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा, आदि को देवताओं के रूप में पूजते थे।
- पूजा की विधि- यज्ञ।
- प्रमुख देवता-
 - इन्द्र (गङ्गाड़ाहट के देवता) - सबसे महत्वपूर्ण देवता जिन्हें 250 भजन समर्पित किए गए हैं। पुरंदर या किलों को तोड़ने वाला भी कहा जाता है।
 - अग्नि (अग्नि के देवता) - दूसरे सबसे प्रमुख देवता। भगवान और लोगों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। जिन्हें 200 भजन समर्पित किए गए हैं।
- महिला देवता - उषा और अदिति।
- कोई मंदिर नहीं और कोई मूर्ति पूजा नहीं।
- ऋग वैदिक भजन ('सूक्त') देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।
- पूजा और बलिदान - मुख्य रूप से 'प्रजा और पशु' के लिए यानी बढ़ती आबादी, मवेशियों की रक्षा, पुत्र प्राप्ति और बीमारी के खिलाफ किए जाते थे।
- महत्वपूर्ण पुजारी- महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र।

ऋग्वेदिक युग में प्रयुक्त शब्द

गोधुली	समय का मानक
गव्युति	दूरी का मानक
दुहित्री	गाय का दोहन करने वाली
गोत्र	शासन
गण	वंशावली
गौरी	बैल
गौजीत	गाय का विजेता
वाप	बोना
श्रीनि	दरांती
क्षेत्र	खेती की भूमि
उर्वर	उपजाऊ क्षेत्र
धान	अनाज
घृत	घी
गोधना	अतिथि, जिन्हें पशुओं का मांस खिलाया जाता था
यव	जौ

उत्तर वैदिक काल

(1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भौगोलिक विस्तार

- आर्य पूर्व की ओर बढ़े और पश्चिमी और पूर्वी उत्तर प्रदेश (कोसल) और बिहार पर कब्जा कर लिया।
- धीरे-धीरे ऊपरी गंगा घाटी में बस गए।
- भारत के तीन विस्तृत विभाजन हैं-
 - आर्यवर्त (उत्तर),
 - मध्यदेश (मध्य भारत) और
 - दक्षिणाधर्म (दक्षिण)

राजनीतिक संरचना

- छोटे राज्यों को मिलाकर महाजनपद जैसे बड़े राज्य बनाए गए।
- 'जन' 'जनपद' बनने के लिए विकसित हुआ और राजा की शक्ति में वृद्धि हुई।
- बलिदान- राजसूय (अभिषेक समारोह), वाजपेय (रथ दौड़) और अश्वमेध (घोड़े की बलि) - राजा द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किए जाते थे।
- राजा की उपाधियाँ- राजाविस्वजानन, अहिलभुवनपति, विराट, भोज, एकरात और सम्राट।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया।
- सभाओं और समितियों का महत्व कम हो गया।
- "राष्ट्र" शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ।
- आदिवासी सत्ता प्रादेशिक बन गई।
- कुरु 'जनपद' की राजधानियाँ- हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ।
- राजत्व की उत्पत्ति के संबंध में 2 सिद्धांत।
 - ऐतरेय ब्राह्मण → राजत्व की उत्पत्ति की आम सहमति से चुनाव के तर्कसंगत सिद्धांत की व्याख्या की।

- तैत्रिरिय ब्राह्मण → राजत्व की दिव्य उत्पत्ति की व्याख्या की।
- राजा के पास पूर्ण शक्ति थी - सभी विषयों का स्वामी।
- शतपथ ब्राह्मण - राजा अचूक और सभी प्रकार के दण्डों से मुक्त।
- ऋग्वेदिक काल की सभा बंद कर दी गई।
- राजा ने युद्ध, शांति और राजकोषीय नीतियों जैसे मामलों पर समिति की सहायता और समर्थन माँग।
- सरकार - इस अर्थ में अधिक लोकतांत्रिक कि आर्य जनजातियों के नेताओं के अधिकार को राजा द्वारा मान्यता दी गई थी।

इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण राजनीतिक पदाधिकारी-

पद	कार्य
ब्रजपति	चारागाह भूमि के प्रभारी अधिकारी
पुरोहित	पुजारी
जीवग्रिभा	पुलिस अधिकारी
सेनानी	सुप्रीम कमांडर-इन-चीफ
ग्रामिणी	गांव का मुखिया
कुलपति	परिवार का मुखिया
स्पासा	जासूस
भगदुघा	राजस्व संग्रहकर्ता
मध्यमासी	मध्यस्थ
पलगला	दूत
संगरिहित्री	कोषाध्यक्ष
सुता	सारथी
स्थपति	मुख्य न्यायाधीश
महिषी	मुख्य रानी
गोविकर्तना	वनों और खेलों के रक्षक
अक्षवपा	मुनीम
तक्षना	बद्री
ग्राम्यवादिन	ग्राम न्यायाधीश

समाज

- 4 वर्ण आश्रम व्यवस्था - व्यवसाय पर कम आधारित और अधिक वंशानुगत।
- 1. **ब्राह्मण** -
 - बौद्धिक और पुरोहित वर्ग।
 - उत्कृष्टता के एक उच्च स्तर को बनाए रखते थे और अनुष्ठानों का विवरण जानते थे।
- 2. **क्षत्रिय** -
 - लड़ाकू वर्ग।
 - युद्ध, विजय, प्रशासन- इस वर्ग के प्रमुख कर्तव्य।
 - 2 क्षत्रिय राजा - जनक और विश्वामित्र ने ऋषि का यह प्राप्त किया।

- 3. **वैश्य -**
 - व्यापार, उद्योग, कृषि और पशुपालन करते थे
 - वैश्यों में धनी लोग- श्रेष्ठिन- शाही दरबार में अत्यधिक सम्मानित।
- 4. **शूद्र -**
 - हालत दयनीय → इनकी हालत दयनीय थी।
 - अछूत → अस्पर्शनीय थे।
 - पवित्र अग्नि के पास जाने अर्थात् यज्ञ करने या पवित्र ग्रंथों को पढ़ने का कोई अधिकार नहीं।
 - शवों के दहन/ जलाने का अधिकार नहीं था।
 - 'द्विज' - ऊपरी 3 वर्णों के पुरुष सदस्य - 'उपनयन' के हकदार हैं अर्थात् पवित्र धागा (जनेऊ) पहनना।
 - 4 आश्रम व्यवस्था -
 - ब्रह्मचर्य (छात्र) - जीवन के पहले 25 वर्ष।
 - गृहस्थ (गृहस्थ) - अगले 25 वर्ष।
 - वानप्रस्थ (उपवासी)- अगले 25 वर्ष।
 - सन्धास (तपस्ची)- जीवन के अंतिम 25 वर्ष।
 - जाति बहिर्विवाह प्रचलित था।
 - कठोर सामाजिक पदानुक्रम जिसने सामाजिक गतिशीलता को सिमित किया।
 - इस काल में संयुक्त परिवार की अवधारणा में सामने आई।
 - परिवार में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन किया जाता था।
 - समान गोत्र विवाह की अनुमति नहीं थी।
 - 'नियोग' - एक नकारात्मक गतिविधि माना जाता है।
 - वर्तमान में 16 संस्कार हैं - संस्कार व्यक्ति में सुधार लाने के लिए माने जाते हैं।

नियोग -

- प्राचीन परंपरा जिसमें एक महिला (जिसका पति या तो पिता बनने में असमर्थ है या बिना बच्चे के मर गया है) एक बच्चे को जन्म देने में मदद करने के लिए एक व्यक्ति से अनुरोध करती है और नियुक्त करती है।
- जिस व्यक्ति को नियुक्त किया गया है वह एक सम्मानित व्यक्ति होगा।

महिलाओं की स्थिति

- इस काल में महिलाओं ने अपना उच्च स्थान खो दिया जो ऋग्वैदिक युग में उनके पास था।
- उन्हें उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- उनके सभी संस्कार, विवाह को छोड़कर, वैदिक मंत्रों के पाठ के बिना किए गए थे।
- बहुविवाह का प्रचलन था।
- कई धार्मिक समारोह, जो पहले पली द्वारा किए जाते थे, अब पुजारियों द्वारा किए जाते थे।
- राजनीतिक सभाओं में शामिल होने की अनुमति नहीं थी।
- बेटी का जन्म अवांछनीय हो गया था।
- बाल-विवाह और दहेज की प्रथा धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

उत्तर वैदिक काल में विवाह के प्रकार

विवाह	विवरण
ब्रह्म विवाह	दहेज सहित समस्त वैदिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए समान वर्ण के लड़के से कन्या का विवाह।
दैव विवाह	पिता अपनी बेटी को दक्षिणा के हिस्से के रूप में एक पुजारी को दान करता है।
अर्शा विवाह	दुल्हन की कीमत स्वीकार कर किसी पुरुष को कन्या दान करना।
प्रजापत्य विवाह	बिना दहेज के विवाह।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह।
असुर विवाह	दुल्हन खरीद कर विवाह।
पिशाच विवाह	बहला-फुसलाकर या रेप करके लड़की से शादी।
राक्षस विवाह	लड़की का अपहरण करके शादी।

शिक्षा

- एक सुनियोजित शिक्षा प्रणाली थी।
- छात्र वेद, उपनिषद, व्याकरण, छंद, कानून, अंकगणित और भाषा सीखते थे।
- उपनयन समारोह - शिक्षा की शुरुआत में छात्रों को शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाता था।
- शिक्षक (गुरु) के घर में रहते थे और एक ब्रह्मचारी के पवित्र जीवन का नेतृत्व करते थे, जिसका मुख्य कर्तव्य अध्ययन और शिक्षक की सेवा थी।
- छात्रों को गुरु के आवास पर निःशुल्क भोजन एवं आवास की सुविधा दी जाती थी।
- पढ़ाई पूरी होने के बाद शिक्षकों को गुरु-दक्षिणा दी जाती थी।

भोजन और पोशाक

- चावल लोगों का मुख्य भोजन बन गया।
- मांस खाने का चलन कम हो गया।
- गौ- हत्या की हत्या को घृणा की विधि से देखा जाता था।
- कपास के साथ-साथ ऊन का भी प्रयोग किया जाता था।

आर्थिक संरचना

- कृषि मुख्य व्यवसाय था।
- धातुकर्म, मृदभाण्ड और बढ़ीगीरी जैसे औद्योगिक काम भी थे।
- बाबुल और सुमेरिया जैसे दूर-दराज के क्षेत्रों के साथ विदेशी व्यापार था।

संस्कृति और धर्म

धार्मिक स्थिति

- ऋग्वैदिक देवताओं, वरुण, इंद्र, अग्नि, सूर्य, उषा आदि ने अपना आकर्षण खो दिया।
- शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि जैसे नए देवता प्रकट हुए।
- रुद्र - शिव का विशेषण - जल्द ही महादेव (महान देवता) और चेतन प्राणियों (पशुपति) के स्वामी के रूप में पूजा जाने लगा।
- प्रमुख संरक्षक - विष्णु।
- वासुदेव की पूजा भी शुरू हुई - विष्णु के अवतार कृष्ण वासुदेव के रूप में माने जाते हैं।
- अप्सरा, नागा, गंधर्व, विद्याधर आदि अर्ध देवता भी अस्तित्व में आए थे।
- दुर्गा और गणेश की पूजा की शुरुआत।

अनुष्ठान और बलिदान

- संस्कार और समारोह विस्तृत और जटिल हो गए थे।
- पूजा में बलिदान महत्वपूर्ण हो गया।
- वैदिक स्तोत्र - यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले मंत्र।
- आर्यों ने ब्राह्मण पुजारी की देखरेख में कई यज्ञ किए।

धार्मिक दर्शन

- एक नए बौद्धिक विचार का उदय हुआ।
- कर्म के सिद्धांत में विश्वास - सभी कार्य, अच्छे या बुरे, उनका उचित समय पर फल मिलता है।
- 'मोक्ष' का सिद्धांत - जब एक आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाती है और सार्वभौमिक आत्मा में मिल जाती है।"

आत्मा के स्थानांतरगमन का सिद्धांत -

व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा दूसरे शरीर में चली जाती है और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि वह अपनी सभी अपूर्णताओं से मुक्त नहीं हो जाती और सार्वभौमिक आत्मा में विलीन हो जाती है।

तपस्वी जीवन

- वैदिक लोग जीवन के तपस्वी आदर्श की अवधारणा में विश्वास करते थे क्योंकि संस्कार और समारोह स्वर्ग में आनंद प्राप्त करने का एकमात्र साधन नहीं थे।
- तप और ब्रह्मचर्य के विचार और भी महत्वपूर्ण परिणाम देते हैं।
- तप का अर्थ है शारीरिक यातना के साथ ध्यान।
- तपस्वी व्यक्ति सांसारिक जीवन का त्याग कर देते थे और एकांत में रहते थे - महाभारत और रामायण युग में व्यापक रूप से प्रचलित।

वैदिक काल में होने वाले सोलह संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार	इसमें शिशु को छठे माह में अन्न खिलाया जाता है।
चूड़ाकर्म संस्कार	शिशु के तीसरे से आठवें वर्ष के बीच कभी भी मुंडन कराया जाता था।
कर्णभेद संस्कार	रोगों से बचने हेतु कर्ण आभूषण धारण करने के उद्देश्य से किया जाता था।
विद्यारंभ संस्कार	5वें वर्ष में बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता था।
उपनयन संस्कार	इस संस्कार के पश्चात् बालक द्विज हो जाता था। इस संस्कार के बाद बच्चे को संयमी जीवन व्यतीत करना पड़ता था। बच्चा इसके बाद शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता था।
वेदारंभ संस्कार	वेद अध्ययन करने के लिए किया जाने वाला संस्कार।
केशांत संस्कार	16 वर्ष हो जाने पर प्रथम बार बाल कटाना।
गर्भाधान संस्कार	संतान उत्पन्न करने हेतु पुरुष एवं स्त्री द्वारा की जाने वाली क्रिया।
पुंसवन संस्कार	स्मृति संग्रह के अनुसार गर्भ से पुत्र की प्राप्ति।
सीमन्तोन्नयन संस्कार	गर्भवती स्त्री के गर्भ की रक्षा हेतु किए जाने वाला संस्कार।
जातकर्म संस्कार	बच्चे के जन्म के पश्चात् पिता अपने शिशु को घृत या मधु चटाता था बच्चे की दीर्घायु के लिए प्रार्थना की जाती थी।
नामकरण संस्कार	शिशु का नाम रखना।
निष्क्रमण संस्कार	बच्चे के घर से पहली बार निकलने के अवसर पर किया जाता था।
समावर्तन संस्कार	विद्याध्यन समाप्त कर घर लौटने पर किया जाता था यह ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति का सूचक था।
विवाह संस्कार	वर वधु के परिणय सूत्र में बंधने के समय किया जाने वाला संस्कार।
अंत्येष्टि संस्कार	निधन के बाद होने वाला संस्कार।

3 CHAPTER

बौद्ध धर्म और जैन धर्म : उत्थान के कारण और शिक्षाएँ

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दूसरे भाग में उत्पन्न।
- उपजाऊ गंगा के मैदानों में उत्पन्न।
- समतावादी धर्म में वैदिक धर्म पर प्रश्नचिन्ह लगाया।

उत्पत्ति के पीछे के कारण

1. वैदिक दर्शन में शुद्धता का हास-

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक वैदिक दर्शन, भरी अनुष्ठानों का एक समूह में बनकर रह गया था।
- संस्कार और समारोह विस्तृत बहुत महंगे थे।

2. कठोर जाति व्यवस्था-

- खान-पान पर प्रतिबंध और जाति के आधार पर विवाह।
- जाति परिवर्तन असंभव था।
- निम्न जाति के लोगों को दयनीय जीवन व्यतीत करना पड़ता था।
- बौद्ध और जैन धर्म ने उन्हें सम्मानित स्थान प्रदान किया।

3. वैदिक धर्म की जटिलता-

- अंधविश्वास, हठधर्मिता और कर्मकांडों में पतित।
- वैदिक मंत्र - अस्पष्ट और औसत व्यक्ति की बुद्धि से परे

4. ब्राह्मणों की सर्वोच्चता-

- अशांति पैदा कर दी।
- पुराने आदर्शों को खो दिया और ब्राह्मण अब ज्ञान से भरा शुद्ध और पवित्र जीवन नहीं जीते थे।
- क्षत्रिय - दूसरे स्थान पर - ब्राह्मणों के संस्कृत/कर्मकांडों वर्चस्व और उनके द्वारा प्राप्त विभिन्न विशेषाधिकारों पर आपत्ति जताई।

5. विद्वानों की भाषा-

- संस्कृत में लिखे गए सभी धार्मिक ग्रन्थ- कुलीनों की भाषा थी।
- सभी धार्मिक ग्रन्थ संस्कृत में लिखे गये थे जो कुलीनों की भाषा थी।
- बौद्ध और जैन धर्म का प्रचार आम आदमी की पाली या प्राकृत भाषा में हुआ।

6. पशुपालन की आवश्यकता वाली नई कृषि अर्थव्यवस्था का उदय -

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व - हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में आर्थिक और राजनीतिक गतिविधियों का स्थानांतरण।

- प्रचुर मात्रा में वर्षा कारण भूमि अधिक उपजाऊ थी।
- बिहार और उसके आसपास के क्षेत्रों के लौह के भंडार का उपयोग करना आसान हुआ।

7. वैश्यों और अन्य व्यापारिक समूहों द्वारा समर्थित -

- वे अपने सामाजिक स्तर में सुधारना चाहते थे क्योंकि उन्हें जाति के निम्न पदानुक्रम में रखा गया था।
- बौद्ध धर्म और जैन धर्म ने शांति और अहिंसा को बढ़ावा दिया और विभिन्न राज्यों के बीच युद्धों को समाप्त किया। व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा दिया जो आर्थिक वर्ग के लिए लाभदायक था।

बौद्ध धर्म

- एक धर्म व दर्शन जो गौतम बुद्ध की शिक्षाओं और जीवन के अनुभवों पर आधारित है।

गौतम बुद्ध-

- 563 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन नेपाल में कपिलवस्तु के पास लुंबिनी में एक शाक्य क्षत्रिय परिवार में सिद्धार्थ के रूप में जन्म हुआ।
- शाक्यमुनि के नाम से भी जाने जाते हैं।
- पिता का नाम - शुद्धोधन (शाक्य वंश का मुखिया)
- माता का नाम - महामाया, (कोशल वंश की राजकुमारी)।
- यशोधरा से विवाह किया और उनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम राहुल हुआ।
- 4 दृश्य- (i) एक बूढ़ा आदमी (ii) एक बीमार आदमी (iii) एक मरता हुआ आदमी (iv) एक तपस्वी → जीवन के सत्य और अर्थ की तलाश में चन्ना (सारथी) और कंथक (घोड़ा) के साथ घर त्याग दिया।
- मगध में घूमते रहे और अपने गुरु अलारा कलाम की सहायता से ध्यान का अभ्यास किया।
- उदक रामपुत्त- उनके दूसरे शिक्षक।
- सेनानी गाँव में, सुजाता (एक नीची जाति की लड़की) ने उसे एक कटोरी खीर भेंट की।
- 7 वर्षों तक इधर-उधर भटकने के बाद, उन्होंने निरंजना (फलु) नदी के तट पर एक पीपल के पेड़ के नीचे उरुवेला (बोधगया) में 35 वर्ष की आयु में ज्ञान प्राप्त हुआ। इसलिए, उन्हें "बुद्ध" या प्रबुद्ध कहा गया।
- पाली भाषा में उपदेश दिया।
- पहला उपदेश- बनारस के सारनाथ में।
- घटना - धर्म चक्र प्रवर्तन (धर्म का पहिया घुमाना)।

- बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए कोसल, कपिलवस्तु, वैशाली और राजगृह की यात्रा की।
- श्रावस्ती में अधिकतम उपदेश दिया।
- मृत्यु- 483 ईसा पूर्व - 80 वर्ष की आयु में उत्तर प्रदेश के कुशीनगर (घटना- महापरिनिर्वाण)।
- अंतिम शब्द, "जितने भी संस्कृत है, सब नाश होने वाले हैं, प्रमाद रहित होकर अपना कल्याण करो"।

बुद्ध के जीवन से जुड़ी महान घटनाएं	प्रतीक
अवक्रांति (गर्भाधान या सभ्य)	सफेद हाथी
जाति (जन्म)	कमल और बैल
महाभिनिष्ठमण (त्याग)	घोड़ा
निर्वाण/संबोधि (ज्ञानोदय)	बोधि वृक्ष
धर्मचक्र परिवर्तन (पहला उपदेश)	पहिया
महापरिनिर्वाण (मृत्यु)	स्तूप

बुद्ध के शिष्य

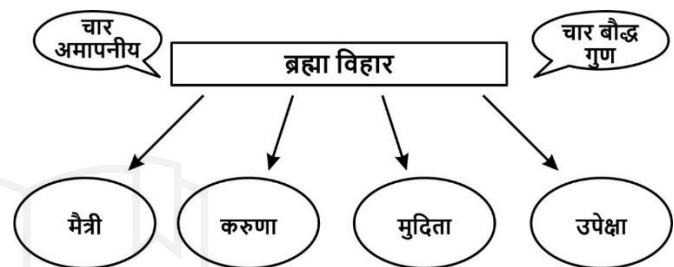
- कॉण्डिन्य - प्रथम अरहंत (कुलीन)
- असजी - सारिपुत्र और महामोगल्लान को बौद्ध धर्म में परिवर्तित किया।
- सारिपुत्र- बुद्ध के पहले प्रमुख शिष्य, ज्ञान में अग्रणी।
- महामोगल्लान - बुद्ध के दूसरे प्रमुख शिष्य, भौतिक शक्तियों में अग्रणी।
- आनंद- बुद्ध के चरेरे भाई और परिचारक।
- महाकश्यप- पहली बौद्ध परिषद बुलाई।
- उपाली- विनय पिटक का संकलन।
- चन्ना- प्रमुख सारथी।
- अंगुलिमाल।

बुद्ध की मृत्यु के बाद

- बुद्धघोष - 5वीं शताब्दी के भारतीय थेरवाद बौद्ध विद्वान। उन्होंने विशुद्धिमण्गा की रचना की।
- महिदा- सम्राट अशोक के पुत्र, जिन्होंने श्रीलंका में थेरवाद बौद्ध धर्म की स्थापना की।
- संघमित्रा- सम्राट अशोक की बेटी, जिन्होंने श्रीलंका में थेरवाद बौद्ध मठ की स्थापना की।
- नागार्जुन- बौद्ध धर्म के माध्यमिक स्कूल (जहाँ महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान की जाती है) की नींव रखी और शून्यवाद का सिद्धांत दिया।
- असंग- योगाचार दर्शनशास्त्र के प्रमुख प्रतिपादक।
- अश्वघोष ने बुद्धचरित और सारिपुत्र प्रकरण नामक एक संस्कृत नाटक लिखा।
- धर्मकीर्ति- नालंदा विश्वविद्यालय के एक शिक्षक, जिन्हें "भारत का कांट" कहा जाता है।

ब्रह्मविहार

- बौद्ध धर्म की एक अवधारणा।
- ब्रह्मा - दिव्य और विहार - निवास / स्थान।
- चार बौद्ध गुणों की एक श्रृंखला।
- चत्वारि के नाम से भी जाना जाता है।
- पाली भाषा- अप्रमाण ब्रह्मविहार के नाम से भी जाना जाता है।
- मेत्ता सुत्त - ब्रह्म-विहारों में साधकों को या ब्रह्म क्षेत्र में पुनर्जन्म लेने में मदद करने की शक्ति है।
- पूर्व-बौद्ध साहित्य में और बुद्ध के बाद के वैदिक और श्रमणिक साहित्य (उदाहरण के लिए, पतंजलि द्वारा योग-सूत्र) में पाया गया।
- 4 ब्रह्म-विहार जो हीनयान और महायान दोनों परंपराओं द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।



1. मैत्री

- पाली भाषा में मेत्ता।
- अर्थ- प्रेम-कृपा।
- प्रेम और दया का एक सार्वभौमिक गुण जो सभी सत्त्वों के भीतर होना चाहिए।
- इसका अर्थ सभी प्राणियों या परोपकार के प्रति सक्रिय सद्व्यावना भी है।

2. करुणा

- पाली -भाषा में करुण।
- अर्थ- सभी के प्रति करुणा या आशा और एक सुखी वर्तमान जीवन प्राप्त करना।

3. मुदिता

- अर्थ- सहानुभूतिपूर्ण आनंद दिखाना जहाँ एक व्यक्ति दूसरे की खुशी, सफलता या कल्याण के कारण खुश होता है।
- यह सहानुभूतिपूर्ण आनंद स्वार्थ से पूरी तरह से असंबद्ध है।

4. उपेक्षा

- अर्थ- समचित्तता, शांति और सभी के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना।
- इसका उद्देश्य सभी के बीच समानता बनाए रखना है, जहाँ किसी को दूसरों की तुलना में अधिक प्रधानता नहीं दी जाती है।

- जैन धर्म में भी ब्रह्म-विहार की अवधारणा थोड़े अंतर के साथ मिलती है।
- जैन धर्म चार गुणों को स्वीकार करता है-
 - मैत्री या प्रेम और दया
 - प्रमोद या प्रशंसा
 - करुणा
 - मध्यस्थ या सभी के प्रति सम्भाव।

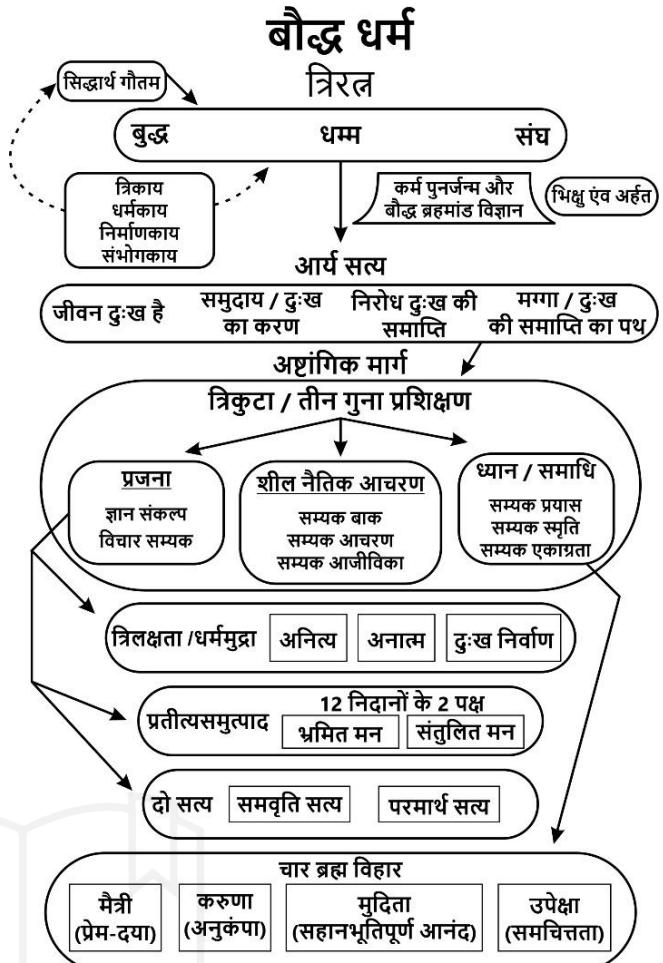
बौद्ध धर्म की शिक्षा

1. पंचशील (पांच उपदेश या सामाजिक आचार संहिता)

- हिंसा न करना
- चोरी न करना
- व्यभिचार न करना
- झूठ न बोलना
- नशा न करना

2. आर्य सत्य

- चार आर्य सत्य (बौद्ध धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में से एक) - कहा जाता है कि ये बुद्ध ने अपने पहले उपदेश में दिए थे, जो उन्होंने उनके ज्ञानवर्धन के बाद दिया था।
- बौद्ध धर्म के सभी स्कूलों द्वारा स्वीकार किया गया और व्यापक टिप्पणी का विषय रहा है।
- पहला सत्य-दुःख (पाली: दुक्खा; संस्कृत: दुहखा)** - पुनर्जन्म के दायरे में अस्तित्व की विशेषता जिसे संसार कहा जाता है (शाब्दिक रूप से "भटकना")। अपने अंतिम उपदेश में, बुद्ध ने दुःख के रूपों की पहचान की।
 - जन्म,
 - उम्र बढ़ना,
 - बीमारी,
 - मौत,
 - मुश्किलों का सामना करना,
 - सुख से अलगाव,
 - जो चाह है, उसे प्राप्त नहीं करना
 - 5 स्कंध जो मन और शरीर (पदार्थ, संवेदना, धारणा, मानसिक संरचना और जागरूकता) का गठन करते हैं।



- द्विसरा सत्य** - उत्पत्ति / दुःख का कारण।
 - नकारात्मक कार्यों से (जैसे, हत्या करना, चोरी करना और झूठ बोलना) आदि।
 - नकारात्मक मानसिक स्थितियाँ (जैसे, इच्छा, घृणा और अज्ञानता) आदि।
- तीसरा सत्य** - दुःख की समाप्ति (पाली और संस्कृत: निरोध), जिसे आमतौर पर निर्वाण (संस्कृत: निब्बान) कहा जाता है।
- चौथा सत्य** - दुःख की समाप्ति का पथ (पाली: मग्गा; संस्कृत: मार्ग), जिसका वर्णन बुद्ध ने अपने पहले उपदेश में किया था।

3. अष्टांगिका मार्ग

सम्यक विचार (सम्मादिधि या सम्यगदृष्टि)	<ul style="list-style-type: none"> नैतिक सुधार के लिए पहला कदम सही विचारों का अधिग्रहण या सत्य का ज्ञान होना चाहिए। 4 आर्य सत्यों के बारे में सही ज्ञान के रूप में परिभाषित। नैतिक सुधार में मदद करता है, और निर्वाण की ओर ले जाता है।
सम्यक संकल्प/दृढ़ संकल्प	<ul style="list-style-type: none"> जब तक कोई उनके जीवन को सुधारने का संकल्प नहीं लेता, तब तक केवल सत्य का ज्ञान बेकार होगा।

	<ul style="list-style-type: none"> नैतिक आकांक्षी को सांसारिकता (संसार से सभी को लगाव) को त्यागने के लिए कहा जाता है। 	
सम्यक वाक् (संवाद या सम्यग्वाक्)	<ul style="list-style-type: none"> झूठ, निन्दा, भद्रे शब्दों और फालतू की बातों से दूर रहना। 	
सम्यक आचरण (सम्मक्षमंता/ सम्यक्कर्मता)	<ul style="list-style-type: none"> पंचशीला, हत्या, चोरी, कामुकता, झूठ और नशा से दूर रहने के लिए 5 व्रत शामिल हैं। 	
सम्यक आजीविका (सम्मा जीव या सम्यग्जीव)	<ul style="list-style-type: none"> ईमानदारी से अपनी आजीविका अर्जित करनी चाहिए। कमाने और अच्छे संकल्प के साथ संगति में काम करने के लिए निषिद्ध साधन नहीं लेने चाहिए। 	
सम्यक प्रयास (सम्मवायम या सम्यग्व्ययम)	<ul style="list-style-type: none"> जब तक व्यक्ति पुराने बुरे विचारों को जड़ से उखाइने और बुरे विचारों को नए सिरे से उत्पन्न होने से रोकने के लिए निरंतर प्रयास नहीं करता है, तब तक कोई निरंतर प्रगति नहीं कर सकता है। मन को अच्छे विचारों से भरने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए और ऐसे विचारों को मन में बनाए रखना चाहिए। 	
सम्यक स्मृति (संमासती या सम्यक्स्मृति)	<ul style="list-style-type: none"> इसका अर्थ है वर्तमान क्षण में क्या हो रहा है, इसके बारे में जागरूक होना। यह शरीर की गतिविधियों के बारे में जागरूक होना है। इसका अर्थ संवेदनाओं या भावना, धारणा, विचारों और मन की गतिविधियों के संबंध में ध्यान रखना है। मन में संतुलन का गुण उत्पन्न करता है। 	
सम्यक एकाग्रता (सम्मासमाधि / सम्यक् समाधि)	<ul style="list-style-type: none"> सम्यक प्रयास + सम्यक स्मृति = सम्यक एकाग्रता। ध्यान में एकाग्रता स्थापित करने के लिए श्वास का ध्यान बहुत ही लोकप्रिय तरीका है। श्वास पर एकाग्र होने से मन की एकाग्रता होती है और अंततः अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, जो व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। बुद्ध ने आत्मज्ञान प्राप्त करने से पहले श्वास पर एकाग्रता का भी अभ्यास किया था। इस हानिरहित और फलदायी एकाग्रता का अभ्यास किसी भी व्यक्ति द्वारा किया जा सकता है, भले ही धार्मिक विश्वास कुछ भी हो। 	

4. मोक्ष - जब कोई व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाता है, तभी वह निर्वाण (बुझा हुआ) प्राप्त कर सकता है।

5. त्रिरत्न (बौद्ध धर्म के तीन रत्न)-

- जागृत मन की 3 अभिव्यक्तियाँ - बुद्ध, धर्म और संघ।
- बौद्ध पथ के आवश्यक तत्व।

(i) बुद्ध

- ऐतिहासिक बुद्ध, मूल शिक्षक को संदर्भित करता है।
- वह भगवान नहीं बल्कि एक इंसान थे, और उनका उदाहरण हमें दिखाता है कि हम भी आत्मज्ञान के मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं।
- उन सभी शिक्षकों और प्रबुद्ध प्राणियों को संदर्भित करता है जो हमें प्रेरित और मार्गदर्शन करते हैं।

(ii) धर्म

- मौलिक सत्य जो बुद्ध ने स्वयं सिखाया था, से शुरू होता है 4 महान सत्य, अस्तित्व के 3 निशान, अष्टांगिक मार्ग, आदि।
- इसमें बौद्ध शिक्षाओं का विशाल समूह शामिल है जो 2,600 वर्षों में विकसित हुए हैं।
- एक बुनियादी कानून या वास्तविकता की सच्चाई को दर्शाता है।

(iii) संघ

- भिक्षुओं और अर्हतों को संदर्भित करता है जिनमें चिकित्सक शरण लेते हैं।
- एक विशिष्ट समुदाय या समूह का वर्णन करता है।

बौद्ध संघ

- प्रार्थना हॉल
- कोई सदस्यता नहीं
- कोई जाति प्रतिबंध नहीं
- महिलाओं को संघ में शामिल होने की अनुमति थी। (शुरू में, उन्हें अनुमति नहीं थी, हालांकि अपने मुख्य शिष्य आनंद की सलाह पर, बुद्ध ने महिलाओं को संघ में शामिल होने की अनुमति दी। प्रजापति गौतमी, संघ में शामिल होने वाली पहली महिला थीं।)
- दास, सैनिक, देनदार, और दायित्व के तहत अन्य व्यक्ति - अपने वरिष्ठ की पूर्व अनुमति से शामिल हो सकते हैं।
- अपराधियों, और संक्रामक रोग से प्रभावित लोगों को शामिल होने की अनुमति नहीं है।
- पातिमोक्षा - 64 अपराध जो निषिद्ध थे।

बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण पहलू

1. पंच-खंड/संकंध

- रूप- पंच भौतिक इंद्रियां और उनकी संबंधित वस्तुएं (आंख- दृश्यता, कान-ध्वनि, नाक-गंध, जीभ- स्वाद, और लिंग - स्पर्श।
- वेदना- वह अनुभूति जो वस्तु के इन्द्रियों के संपर्क में आने पर उत्पन्न होती है।